समय : 3 घण्टे] [अधिकतम अंक : 80

1. (अ) निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए— 4

(1) जगत के सब रहस्यों का द्वार ..... है।

(अ) प्रेम (ब) दुख (स) ईर्ष्या

(2) शनि के वलयों की संख्या अब ..... पर पहुँच गई है।

(अ) पाँच (ब) छः (स) सात

(3) शांतिनिकेतन छोड़कर कुछ काल गुरुदेव ..... में रहे।

(अ) कोलकाता (ब) कलानिकेतन (स) श्रीनिकेतन

(4) त्यागी जी काफी बड़े ..... हैं।

(अ) आदमी (ब) नेता (स) अफसर

(आ) निम्नलिखित गद्यांशों में से कोई एक गद्यांश पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए— 4

"सोना भी इसी प्रकार अचानक आई थी, परन्तु वह तब तक अपनी शैशवावस्था भी पार नहीं कर सकी थी। सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल, लघु शरीर था।"

प्रश्न :

(1) उपर्युक्त वर्णन किस पाठ से लिया गया है और किससे सम्बन्धित है?

(2) 'सोना' किसका नाम है?

(3) सोना का शरीर कैसा था?

(4) उपर्युक्त गद्यांश में किसके सौंदर्य का वर्णन किया गया है?

अथवा

"शांभा—साहब कल रात यह भेड़िया घने जंगलों में पेड़ काटता पाया गया। आपके हुक्म से लोग हजारों पेड़ लगा रहे हैं, लेकिन यह पापी उन पेड़ों को काटकर बेच देता है।"

प्रश्न :

(1) उपर्युक्त अवतरण किस एकांकी से लिया गया है और उसके लेखक कौन हैं ?

(2) प्रस्तुत अवतरण किसने-किससे कहा है ?

(3) किसके हुक्म से लोग हजारों पेड़ लगा रहे हैं ?

(4) पेड़ क्यों काटे जाते हैं ?

2. (अ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर लगभग 80 शब्दों में हो— 8

(1) जीवन में रसायनों का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

(2) कार्यहीन मनुष्यों का मन शैतान का निवास स्थान होता है, पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(3) विवेकानंद जी ने स्वदेश भक्ति के संबंध में कौन-सा आदर्श प्रस्तुत किया है?

(4) सच्चिदेव बाबू के घर का दरवाजा न खुलने पर यदु मिस्त्री ने क्या किया है?

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखिए— 6

(1) चित्रगुप्त की परेशानियों को रेखांकित कीजिए।

(2) सयानी बुआ का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(3) 'एक मुट्ठी छौंव' कहानी में चित्रित परिवार की सहृदयता का परिचय दीजिए।

3. (अ) निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए— 4

(1) प्रभुजी तुम ..... हम बाती।

(अ) तेल (ब) दीपक (स) ज्योति

(2) बचाना है नदियों को .... हो जाने से।

(अ) गंदा (ब) नाला (स) मैला

(3) उठो कि धोबी पहुँच गया है .... पर।

(अ) घाट (ब) घर (स) नदी

(4) बहुत याद आता है, मेरा छोटा-सा .... ।

(अ) देहात (ब) गाँव (स) ग्राम

(आ) निम्नलिखित पद्यांशों में से कोई एक पद्यांश को पढ़कर उसके नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए— 4

जो तोको काँटा बुवै, ताहि बोय तू फूल।
तोहि फूल को फूल हैं, वाको हैं तिरसूल।।

प्रश्न :

(1) प्रस्तुत दोहा किस सन्त कवि का है ?

(2) इस दोहे में क्या बोने को कहा है ?

(3) हमारे लिए काँटा बोने वाले के लिए फूल बोने पर हमें क्या मिलेगा ?

(4) काँटा बोने पर काँटे से क्या मिलेगा ?

अथवा

"मेरी हार देश की जय हो
स्वार्थ भाव का क्षण-क्षण क्षय हो
जल जलकर जीवन दूँ जग को,
बस, इतना सम्मान चाहिए।"

प्रश्न :

(1) प्रस्तुत पद्यांश किस कविता का है?

(2) किसकी जय हो ?

(3) किसका क्षय होना चाहिए ?

(4) किस तरह का सम्मान चाहिए ?

4. (अ) **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 60 शब्दों में हो—** 6

(1) रहीम ने प्रेम की गली को साँकरी क्यों कहा है ?

(2) वृक्ष हमेशा किस तरह चौकन्ना रहता है?

(3) 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में कवि ने दीन स्त्री की वेदना को किस प्रकार उजागर किया ?

(4) गाँव का धार्मिक माहौल किस प्रकार का था? 'बहुत याद आता है' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए— 4

(1) तुकड़ोजी के पद के आधार पर मित्र और शत्रु के भेद को स्पष्ट कीजिए।

(2) रैदास जी ने प्रभु के प्रति अपना भक्ति भाव किन दृष्टान्तों द्वारा स्पष्ट किया है?

(3) 'बुनाई का गीत' कविता का आशय स्पष्ट कीजिए।

5. (अ) **निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए—** 4

(1) अहिंसा एक विज्ञान है' इस विचार का पाठ के आधार पर विवेचन कीजिए।

(2) आदर्श विद्यार्थी के कर्तव्य भीमराव के छात्र जीवन में कैसे दिखाई देते हैं ?

(3) जापान में हिन्दी का प्रभाव व प्रसार किन प्रसंगों में दिखाई देता है ?

(आ) निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए। प्रत्येक टिप्पणी लगभग 60 शब्दों में हो— 6

(1) अहिंसा के सिद्धान्त।

(2) मदर टेरेसा - मानवता की सच्ची सेविका।

(3) लेखक का मित्र और फाउण्टेन पेन ?

(4) सरोवर में हंस-हंसिनी की बातें।

अथवा

निम्नलिखित में से किसी एक पाठ का सारांश लगभग 120 शब्दों में लिखिए—

(1) महान विभूतियाँ (2) ज्ञान साधना।

6. (अ) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों के रचना के अनुसार भेद पहचानकर लिखिए— 2

(1) उसे अब काम नहीं करना पड़ेगा और मजे में दिन काटने का अवसर मिलेगा।

(2) दुर्भाग्य से वायु प्रदूषण एक घरेलू शब्द बन गया है।

(3) डॉक्टर ने कहा कि माँ का साथ रहना ठीक नहीं होगा।

(आ) कोष्ठक की सूचना के अनुसार किन्हीं दो वाक्यों का काल परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए— 2

(1) शनि सूर्य का एक चक्कर लगाता है।
(अपूर्ण वर्तमान काल में लिखिए)

(2) अपने पड़ोसी से मुझे एक हिरन मिलता है।
(पूर्ण भूतकाल में लिखिए)

(3) आश्रम के अधिकांश लोग गए थे।
(सामान्य भविष्यकाल में लिखिए)

(इ) (i) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द का भाववाचक संज्ञा का रूप लिखिए— 1

(अ) सज्जा (ब) व्याकुल

(ii) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द का विशेषण रूप लिखिए— 1

(अ) पुराण (ब) संयम

(ई) निम्नलिखित मुहावरों में से किन्हीं दो के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए— 2

(1) डींग हाँकना। (2) पैरों पर लोटना।

(3) हिदायत देना। (4) दिमाग सातवें आसमान पर होना।

(उ) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखिए— 2

(1) मिथेन पाणी की भूमिका अदा करती है।

(2) जिवन जोखिम से भरी है।

(3) नर्स कहीं चला गई था।

7. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबन्ध लिखिए— 10

(1) कंप्यूटर एक वरदान।

(2) एक घायल सैनिक की आत्मकथा।

(3) भ्रष्टाचार के बढ़ते कदम।

(4) यदि समाचार पत्र न होते।

(5) कल करे सो आज कर.....।

8. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्य खण्ड को ध्यान से पढ़िए और उस पर आकलन हेतु पाँच ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर मात्र एक-एक वाक्य में हों— 5

स्वार्थ और अन्याय की प्रतिस्पर्धा आज सर्वव्यापी हो गई है। इसी सिद्धांत पर अनेक देशों की राजनीति चलती है। सच्चा सुधार तो प्रेम-धर्म और पड़ोसी-धर्म में ही है। हमें श्रद्धापूर्वक अपने अन्दर इसी पड़ोसी-धर्म का विकास करना चाहिए। जो सज्जनता दिखलाते हों उनके साथ मैत्री और जो दुर्जन बन गए हों उनके साथ असहयोग करना, यही प्रेम-धर्म का नियम है। प्रेम-धर्म सहानुभूति रखता है, सहायता देता है, परन्तु दीन बनकर सहायता की अपेक्षा नहीं करता। प्रेम-धर्म निर्भय होता है, इसलिए वह अमर्यादित है। हम जिससे प्रेम करते हैं यदि उसकी शक्ति बढ़ती है तो हमें भय नहीं होता। हमारा मित्र जितना निर्बल होगा उतने ही हम कमजोर माने जायेंगे।

अथवा

उपर्युक्त गद्यखण्ड का एक-तिहाई (1/3) शब्दों में सार लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए।

(ब) निम्नलिखित पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए— 5

प्रकाश / प्राजक्ता पाटील, 105 स्वामी विवेकानंद नगर, नागपुर से प्राचार्य विजय आहेर, कनिष्ठ महाविद्यालय, नागपुर को पाँच दिनों की छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र लिखता / लिखती हैं।

अथवा

दिए गए विषय पर विज्ञापन तैयार कीजिए—

'नहाने का सौंदर्य साबुन'

■■

उत्तरमाला

1. (अ) 4

(1) (अ) प्रेम

(2) (स) सात

(3) (स) श्रीनिकेतन

(4) (स) अफसर

(आ) (क) 4

(1) उपर्युक्त वर्णन महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'सोना' पाठ (रेखाचित्र) का है और महादेवी वर्मा की पालतू हिरनी से सम्बन्धित है।

(2) 'सोना' लेखिका की पालतू हिरनी का नाम है।

(3) सोना का शरीर सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गाँठ के समान कोमल और लघु था।

(4) इस गद्यांश में लेखिका की पालतू सोना हिरनी के सौन्दर्य का वर्णन किया है।

अथवा

(ख) (1) उपर्युक्त अवतरण 'युवा क्रान्ति के शोले' नामक एकांकी से लिया गया है और इसके लेखक मधुकान्त हैं।

(2) प्रस्तुत अवतरण नम्बरदार शोभाने सरपंच गबरूसिंह से कहा है।

(3) सरपंच गुबरु सिंह के हुक्म से लोग हजारों पेड़ लगा रहे हैं।

(4) पेड़ों की लकड़ी को बेचने के लिए पेड़ काटे जाते हैं।

2. (अ) 8

(1) जिस युग में हम रहते हैं, उसे रसायनों का युग कहा जा सकता है। हमारे पर्यावरण की सारी वस्तुएँ रासायनिक यौगिकों से बनी हैं और ये यौगिक ही हमारे जीवन के आधार भी हैं जैसे-जल, ऑक्सीजन और हाइड्रोजन से बना एक यौगिक है। दूध, चाय, लस्सी, शर्बत आदि को मीठा और स्वादिष्ट बनाने वाली चीनी भी कार्बन, ऑक्सीजन और हाइड्रोजन का मिश्रण है, सामान्यत: उपयोग में लाए जाने वाले एंटीबायोटिक, एस्प्रीन और पेनिसिलीन भी रसायन हैं, अनाज, फल, सब्जियाँ तथा मेवे भी रासायनिक पदार्थ हैं। आपके भोजन को स्वादिष्ट बनाने वाला नमक भी सोडियम और क्लोरीन के यौगिक से बना एक रासायनिक पदार्थ है।

अत: हम यह कह सकते हैं कि हमारे जीवन की सभी जरूरतें रसायन के द्वारा ही पूरी होती है। अत: रसायनों का हमारे जीवन में विशेष महत्त्व है।

(2) शैतान स्वभाव से ही उपद्रवी होता है। अच्छी बातें उसे समझ में नहीं आती। इसी तरह कार्यविहीन मनुष्य के मन में तरह-तरह के उपद्रवी विचार आते हैं। उद्योगप्रियता मनुष्य के मन को शान्ति और स्थिरता प्रदान करती है। व्यवसाय में लगे हुए व्यक्ति के मन को इधर-उधर भटकने का अवसर ही नहीं मिलता। वह सदैव अपने काम के विषय में ही सोचता है, कार्य में आने वाली बाधाओं को दूर करने का उपाय सोचता है। वहीं दूसरी ओर एक कार्यहीन व्यक्ति के पास आलस्यपूर्वक समय व्यतीत करने के अलावा और कोई गतिविधि नहीं होती। परोपकार के विचार उसके मन में कभी नहीं आते, वह सदैव ही दूसरों को सताने और उनका बना हुआ काम बिगाड़ने के बारे में सोचता है। इसीलिए कहा जाता है कि खाली दिमाग शैतान का घर। अत: कार्यहीन मनुष्यों का मन शैतान का निवास स्थान होता है।

(3) स्वामी विवेकानंद जी देश के युवाओं से हृदयवान बनने के लिए कहते हैं। वे कहते हैं कि हमारे करोड़ों देशवासी सदियों से पराधीनता सहते-सहते पशुतुल्य हो गए हैं। यदि देश की पराधीनता और भूख से मरने वाले देशवासियों की पीड़ा देखकर हमारा हृदय व्यथित होता है तो देशवासियों के प्रति यह हमारी सहृदयता का प्रतीक है। यह सहृदयता देश-भक्ति की पहली सीढ़ी है। देश-भक्ति का यह भाव जागने पर व्यक्ति अपने नाम, यश और सम्पत्ति को भी भूल जाता है।

अत: प्रस्तुत निबंध में विवेकानंद जी ने स्वदेश भक्ति के सम्बन्ध में देशवासियों के प्रति सहृदयता का आदर्श प्रस्तुत किया है।

(4) अँधेरी, तूफानी और बरसाती रात में यदु मिस्त्री इंजीनियर सचदेव बाबू से कुछ रुपये उधार लेने आया था। बहुत देर तक दरवाज़ा थपथपाने पर इंजीनियर साहब ने उसकी आवाज पहचान ली थी, पर शहर के दहशत भरे वातावरण के कारण सचदेव बाबू ने दरवाजा खोलने का साहस नहीं किया।

दरवाजा देर तक थपथपाने के बाद यदु मिस्त्री को याद आया कि बाहर के गेट से आवाज अन्दर नहीं पहुँचती। इसलिए वह गेट फाँदकर बालकनी में मुख्य दरवाजे के पास पहुँच गया और इंजीनियर साहब के नाम से आवाज लगाने लगा। उसे लगा कि परिचित आवाज में लूटपाट की घटनाओं के कारण साहब डर गए हैं, लेकिन फिर भी वह अपने प्रति उनका आत्मीय और स्नेहपूर्ण व्यवहार याद करके दरवाजा थपथपाता और आवाज लगाता रहा।

इस प्रकार सचदेव बाबू का दरवाजा न खुलने पर यदु मिस्त्री ने दरवाजा खुलवाने का प्रयत्न नहीं छोड़ा।

(आ) 6

(1) लेखक अस्पताल में था और चित्रगुप्त उसके प्राण लेने आए थे। तब उनसे प्रार्थना की गई कि वे शनिवार को लेखक के प्राण लेने आएँ। जब वे शनिवार को प्राण लेने आए तो अस्पताल के मुंशी ने नया नियम बताते हुए कहा कि अस्पताल से कोई भी चीज ले जाने के लिए उन्हें बड़े बाबू के दफ्तर से एक फार्म लेकर भरना पड़ेगा। स्वतन्त्रता से पूर्व चित्रगुप्त को ऐसे किसी फार्म के चक्कर में नहीं फँसना पड़ा था। इस फार्म को भरने में पूरा एक दिन लग गया। अब मुसीबत यह थी कि उन्हें यह फार्म आठ प्रतियों में सही-सही भरना था तथा साथ ही मरने वाले का नाम, पेशा, हुलिया, वल्दियत, ऊँचाई, चौड़ाई और वजन आदि सब ठीक-ठीक ईमानदारी से भरना था।

चित्रगुप्त ने बड़ी मुश्किल से फार्म भरा। भरने के बाद बाबू ने सम्भ्रान्त व्यक्ति के दस्तखत कराने को कहा जो उन्हें भली-भाँति जानता हो। चित्रगुप्त बहुत देर तक घूमते रहे अन्त में लेखक ने ही उस पर दस्तखत किये। इसके बाद चित्रगुप्त के सामने बीस रुपये की रसीदी टिकट की समस्या आ गई, क्योंकि डाकखाने बन्द हो चुके थे। अन्त में बड़े बाबू की सलाह पर ही उनकी समस्या हल हो पाई।

इस प्रकार लेखक के प्राण लेने आए चित्रगुप्त को अनेक परेशानियाँ झेलनी पड़ीं।

(2) सयानी बुआ समय की पाबंद और व्यवस्था की कायल महिला हैं। उनके परिवार का सारा कामकाज बुआ जी की बनाई गई समय सारिणी के अनुसार होता है। बुआजी अपने परिवार के सदस्यों से बड़ी कठोरता के साथ उस समय सारिणी का पालन करवाती हैं। उनका व्यक्तित्व पूरे परिवार पर हावी रहता है। उनके खिलाफ बोलने की किसी की हिम्मत नहीं पड़ती।

बुआजी जितनी समय की पाबंद हैं, उतनी ही कुशल वे अपनी वस्तुओं का उपयोग करने और उनको सँभालकर व्यवस्थित रूप से रखने में हैं। सयानी बुआ की गृहस्थी जमे पन्द्रह वर्ष हो चुके हैं, पर उनके घर का साज-सामान देखकर लगता है कि जैसे सब कुछ कल ही खरीदा हो। बुआजी को तोड़-फोड़ से सख्त नफरत थी, अपनी किसी भी चीज का टूट जाना बर्दाश्त के बाहर था। एक बार नौकर से सुराही टूट जाने पर उन्होंने नौकर को बहुत पीटा था। बुआजी को अपने घर की साज-सज्जा और घर की व्यवस्था पर बड़ा गर्व है। वे अपने पति से कहती हैं कि उनके बिना घर को इतना व्यवस्थित कोई नहीं रख सकता।

बुआजी की बेटी अन्नू उनके भय से उनके सामने कुछ बोल नहीं सकती, पर बेटी की बीमारी बुआजी को व्याकुल कर देती है। उन्हें बहुत दुःख है कि वे अन्नू की देखभाल के लिए उसके साथ पहाड़ पर जा नहीं सकतीं। तीन दिन तक अन्नू का समाचार न मिलने पर वे चिंतित हो जाती हैं। पत्र मिलने पर अन्नू के चल बसने की गलतफहमी से वे फूट-फूटकर रो पड़ती हैं। अन्त में अन्नू के सकुशल होने की बात जानकर वे खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। इस खुशी में वे अपने कीमती प्याले के टूट जाने की भी परवाह नहीं करतीं। अतः यह कहा जा सकता है कि सयानी बुआ के कठोर स्वभाव में कहीं न कहीं कोमलता भी छिपी है। अर्थात, बुआ उस नारियल के फल के समान हैं जो ऊपर से कठोर परन्तु अन्दर से कोमल होता है।

(3) 'एक मुट्ठी छाँव' कहानी में हमें मानवीय सहृदयता के अनोखे दर्शन होते हैं, बाऊजी के घर में सहृदयता की पहली झाँकी देखने को मिलती है। मिस्त्री सूरजमल बाऊजी द्वारा बताए हुए काम में लगा है। इधर उसके भूखे बच्चे शांत और सुशील भाव से बैठे हैं, उन्हें धूप में बैठे हुए देखकर बाऊजी और उनकी पत्नी दया भाव से भर उठते हैं, बाऊजी की पत्नी बच्चों को छाँव में बिठाती हैं और खाने के लिए केले और मिठाइयों के टुकड़े देती हैं।

सूरजमल के बच्चों के प्रति अपनी पत्नी की सहृदयता देखकर बाऊजी को रामस्वरूप जी की पत्नी का स्मरण हो आता है। उस सहृदय महिला का सान्निध्य मिलने पर बाऊजी ने उसके आँचल का छोर पकड़कर कह दिया था– "चाची, घर में सब भूखे हैं खाना बना ही नहीं। पिताजी रामस्वरूप चाचा से पैसे उधार लेने आए थे।" तब उस सहृदय महिला ने यह बात अपने पति को बताई थी और उन्होंने बाऊजी के पिता को ट्यूशन के अग्रिम पैसे दिए थे। कहानी में सहृदयता की दूसरी झाँकी थी।

कहानी में बाऊजी की पत्नी का सूरजमल के बच्चों के साथ बात करना, बच्चों का खुलकर जवाब देना, सूरजमल की करुणकथा सुनकर बाऊजी का स्वभाव किफायती होते हुए भी पिघल जाना, मिस्त्री को 500 रुपये पेशगी देना आदि कहानी को संवेदनापूर्ण बना देती हैं।

इस प्रकार कहानी में सहृदयता का मार्मिक चित्रण लेखिका द्वारा किया गया है।

3. (अ) 4

(1) (ब) दीपक

(2) (ब) नाला

(3) (अ) घाट

(4) (ब) गाँव

(आ) 4

(च) (1) यह दोहा सन्त कवि कबीरदास का है।

(2) इस दोहे में अपने रास्ते में काँटा बोने वालों के रास्ते में फूल बोने को कहा है।

(3) हमारे लिए काँटा बोने वाले के लिए फूल बोने पर हमें फूल मिलेगा।

(4) काँटा बोने पर काँटे से त्रिशूल मिलेगा अर्थात् बुराई प्राप्त होगी।

अथवा

(छ) (1) यह पद्यांश बालकवि बैरागी रचित 'माँ, बस यह वरदान चाहिए' कविता का है।

(2) देश की जय हो।

(3) स्वार्थी प्रवृत्ति का क्षय होना चाहिए।

(4) जल-जलकर संसार को अपना जीवन देने का अवसर पाने का सम्मान चाहिए।

4. (अ) 6

(1) रहीम का मानना है कि ईश्वर की प्राप्ति में मनुष्य का अहंकार सबसे बड़ी बाधा है। हमारा हृदय अत्यन्त संकुचित है, उसमें केवल एक के लिए स्थान है या तो उस संकुचित हृदय में ईश्वर रह सकते हैं या अहंकार, अत: जो व्यक्ति ईश्वर को प्राप्त करना चाहता है उसे सबसे पहले अहंकार का त्याग कर देना चाहिए। जब तक व्यक्ति के हृदय में अहंकार या अभिमान है, तब तक उसमें ईश्वर का प्रवेश नहीं हो सकता।

इस तरह ईश्वर की प्राप्ति के सन्दर्भ में रहीम ने हृदय को बहुत सँकरा कहा है।

(2) कवि के घर के बाहर खड़ा वृक्ष एक चौकीदार की तरह तना हुआ दिखाई देता है। वह बूढ़ा है, मगर बहुत जानदार है। उस पेड़ की एक सूखी डाल राइफल जैसी लगती है। उसकी एक डाली हरी-भरी है जो पत्तियों और फूलों से लदी हुई है। जो कि पेड़ की पगड़ी जैसी लगती है। जमीन से ऊपर उभरी हुई पेड़ की जड़ें पेड़ रूपी चौकीदार के फटे-पुराने जूतों जैसी प्रतीत होती हैं, हवा चलने पर वह जूतों की तरह चरमराती हैं। वह पेड़ चौकीदार की तरह बहुत शक्तिशाली है, चाहे धूप हो या वर्षा उसकी सतर्कता में कोई फर्क नहीं पड़ता।

इस तरह वह पेड़ खाकी वर्दी में एक चौकीदार की तरह चौकन्ना खड़ा रहता है।

(3) कवि निराला ने देखा कि एक मजदूर महिला पत्थर तोड़ रही है। वह समय की मार सह सकने के सिवाय किसी से कुछ कह नहीं सकती। उसके हृदय का सितार बजते-बजते टूट जाता है और उसके तार छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। उन टूटे हुए तारों से ऐसी मर्मभेदी ध्वनि निकलती है, जिसे सुनकर कवि का हृदय दहल जाता है। वह मजदूर महिला अपने दुर्भाग्य के बारे में सोचते-सोचते अचानक चौंक उठती है, उसे अपने जीवन की सच्चाई पत्थर तोड़ने के काम में ही नजर आती है।

इस प्रकार प्रस्तुत कविता में कवि ने उस दीन मजदूर महिला की वेदना को बड़ी मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त किया है।

(4) कवयित्री (ज्योति व्यास) के गाँव में प्रकृति की मनोरम शोभा थी। गाँव की निर्मल जल वाली नदी की तरह ही गाँव के लोगों के मन भी निर्मल थे। गाँव में धर्म को लेकर कोई भेदभाव नहीं था। गाँव के लोग ईद की सेवैयों का स्वाद लेने के साथ-साथ होली के हुड़दंग में भी शामिल होते थे। रश्मि और रेशमा साथ-साथ खेलती थीं। राम और रहीम को मानने वाले लोगों के दिलों में किसी भी तरह की संकीर्ण भावना नहीं थी। गाँव में धर्म के नाम पर कभी कोई खून-खराबा नहीं होता था। इस प्रकार कवयित्री के गाँव के धार्मिक माहौल में समता और ममता थी।

(आ) 4

(1) सन्त तुकड़ोजी कहते हैं कि मूर्ख व्यक्ति से कभी मित्रता नहीं करनी चाहिए। मूर्ख व्यक्ति में दुर्गुण होते हैं। उसका मित्र भी उसके साथ रहकर उन्हीं दुर्गुणों का शिकार हो जाता है। मूर्ख व्यक्ति की तरह उसका मित्र भी कुमार्गी और

दुर्व्यसनी बन जाता है, मूर्ख व्यक्ति का सब जगह अपमान होता है। उसकी संगति में रहने के कारण उसके मित्र को भी लोग दुत्कारते हैं। मूर्ख व्यक्ति की तरह उसके मित्र का जीवन भी तबाह हो जाता है और उसकी जान भी संकट में पड़ सकती है।

तुकड़ोजी कहते हैं कि यदि शत्रु शिक्षित, विद्वान और बुद्धिमान है, यदि उससे ज्ञान की कुछ बातें सीखने को मिल सकती हैं, यदि उसमें अच्छे गुण हैं और उससे जीवन के लिए कोई खतरा नहीं है, तो ऐसा शत्रु, मूर्ख मित्र से लाख गुना अच्छा है। यदि ऐसे शत्रु से हमें अच्छाई के रास्ते पर चलने की प्रेरणा मिलती है, तो शत्रु होकर भी वह हमारे लिए सम्माननीय है।

इस प्रकार तुकड़ोजी ने शत्रु और मित्र के अंतर को स्पष्ट किया है।

(2) रैदास प्रभु श्रीराम के परम भक्त हैं। वे निरन्तर राम नाम जपते रहते हैं, वे हमेशा राम से जुड़े रहना चाहते हैं। इसीलिए वे कहते हैं कि यदि राम चन्दन हैं तो वे पानी हैं, जिसका उपयोग चंदन घिसते समय किया जाता है।

यदि श्रीराम घने बादल हैं, तो रैदास उस मोर के समान हैं जो बादल को देखकर नाचने लगता है। यदि प्रभु राम चन्द्रमा हैं तो रैदास उस चातक पक्षी के सदृश हैं जिसका चन्द्रमा को देखते हुए मन नहीं भरता और ध्यान में राम के दर्शन करते हुए रैदास के मन को तृप्ति नहीं मिलती। यदि श्रीराम दीपक हैं तो रैदास अपने को बाती मानते हैं, जो दीपक में जलकर धन्य होती है। यदि श्रीराम सोना हैं तो रैदास अपने आप को सुहागा मानते हैं। यदि प्रभु श्रीराम स्वामी हैं, तो रैदास उनके दास बनने में धन्यता अनुभव करते हैं।

इस तरह विभिन्न प्रकार के दृष्टांतों द्वारा रैदास ने प्रभु श्रीराम के प्रति अपना भक्तिभाव व्यक्त किया है।

(3) 'चुनाई का गीत' कविता में कवि ने सोए हुए धागों को जाग्रत होकर बुनाई के काम में लग जाने के लिए कहा है। वास्तव में ये धागे हम सभी मानवों के प्रतीक हैं। अधिकांश लोग निष्क्रिय होने के कारण हताश और निराश हैं। उनके जीवन में उलझन है और उनके दिल टूट गए हैं। उन्हें अपने जीवन में कोई भी काम करने के लिए नहीं सूझ रहा है समाज और शासन की जड़ व्यवस्था भी ऐसे लोगों के लिए कुछ भी नहीं कर रही है।

कवि कहता है कि आज आवश्यकता इस बात की है कि लोग कर्म के महत्त्व को समझें, उन्हें जीवन में कर्म की प्रधानता को नहीं भूलना चाहिए। ये दुनिया कर्म के बल पर ही चल रही है। अतः लोगों का यह कर्तव्य है कि वे आलस्य और निराशा त्याग दें और कर्म में लग जाएँ।

कवि कहते हैं कि हमारे कर्म एक-दूसरे पर परस्पर आश्रित हैं। बुनकर, धोबी, दर्जी आदि के कर्म एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं। इसी तरह सभी लोगों के कार्य परस्पर जुड़े हुए हैं। एक का कार्य बन्द होने से उससे जुड़े दूसरे लोगों के कार्य प्रभावित होते हैं अर्थात रुक जाते हैं। अतः किसी को निष्क्रिय होकर नहीं बैठना चाहिए तथा हमें उस व्यवस्था को बदल देनी चाहिए जो हमें आगे बढ़ने से रोकती है।

इस तरह प्रस्तुत कविता 'चुनाई का गीत' में कवि लोगों को जाग्रत हो कर अपने-अपने काम में जुट जाने का आह्वान करते हैं।

5. (अ) 4

(1) महात्मा गाँधी अहिंसा के पुजारी थे। वे अहिंसा के अस्त्र को शक्तिशाली से शक्तिशाली अस्त्र-शस्त्र से भी अधिक मानते थे। उनका मानना था कि अहिंसा एक विज्ञान है, जिस प्रकार विज्ञान में पदार्थों के निरीक्षण, परीक्षण तथा निष्कर्ष पर पहुँचने की प्रक्रियाएँ होती हैं, उसी तरह अहिंसा को परखने के लिए भी इसी तरह की प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है। अहिंसा की परख हिंसा के वातावरण में ही हो सकती है। जिस तरह विज्ञान के क्षेत्र में अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने के लिए कई बार असफलताओं का सामना करना पड़ता है, उसी तरह अहिंसा के क्षेत्र में भी कई बार असफलताएँ हाथ लगती हैं पर ये प्रक्रिया का हिस्सा होती हैं। जिस प्रकार विज्ञान में असफलता के लिए कोई स्थान नहीं होता, उसी प्रकार अहिंसा के क्षेत्र में भी असफलता के लिए कोई स्थान नहीं होता। हिंसा का जवाब अहिंसा से देने में जो कठिनाई महसूस होती है, वह चित्त की दुर्बलता के कारण पैदा होती है।

(2) आदर्श विद्यार्थी का यह कर्तव्य होता है कि वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति को ज्ञान की साधना में लगाए। इसके अलावा वह अन्य किसी के विषय में न सोचे। आदर्श विद्यार्थी का यह रूप डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन में पूर्ण रूप से दिखाई देता है। वह प्रतिदिन सोलह से अठारह घण्टे तक पढ़ते थे। अपने विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए वे उस विषय से सम्बन्धित पुस्तकें पढ़ने में लगे रहते थे, वे पुरानी पुस्तकों को सस्ते दामों पर खरीदकर पढ़ते थे। उद्देश्यपूर्ण अध्ययन ही उनके लिए सब कुछ था। एक बार लाला लाजपतराय ने उनसे अमेरिका स्थित अपनी 'इण्डियन होमरूल्स लीग ऑफ अमेरिका' की सहायता करने के लिये कहा था, तो उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि उनका उद्देश्य केवल पढ़ना है। इस तरह आदर्श विद्यार्थी के कर्तव्य भीमराव के छात्र जीवन में दिखाई देते हैं।

(3) लेखिका ममता कालिया के साथ जापान के टोकयो विश्वविद्यालय में सम्मेलनों में भाग लेने गए प्रतिनिधियों को वहाँ कई मौकों पर हिन्दी का प्रभाव प्रसार होता दिखाई देता है। टोकयो के कलकत्ता रेस्तराँ में प्रतिनिधियों ने हिन्दी संगीत सुना, जापानी हिन्दी फिल्मी गाने बहुत पसन्द करते हैं। टोकयो के विदेशी भाषा अध्ययन संस्थान सभागार में सब लोग हिन्दी भाषा में बातचीत करने की कोशिश कर रहे थे, इनमें से कुछ लोगों का हिन्दी का ज्ञान तो बहुत ही अच्छा था। वहाँ कुछ छात्राओं ने लेखिका ममता कालिया से उनकी हिन्दी कहानियों पर सवाल पूछे। 'टफ्स' के निदेशक प्रोफेसर फुजिई ताकेशी का हिन्दी भाषा में व्यवहार लोगों को बहुत आत्मीय लगता है। 'टफ्स' में पढ़ाई जाने वाली 50 भाषाओं में हिन्दी भी शामिल है, यहाँ हिन्दी एक सदी से पढ़ाई जाती है तथा हिन्दी भाषा में शोध कार्य की भी सुविधा है। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र का संचालन करने वाली छात्रा ने प्रवाहपूर्ण हिन्दी में संचालन किया था और सत्र के अंत में छात्रों ने हिन्दी में प्रश्न पूछे थे। जापान के ओसाका में सेमिनार के उद्घाटन में उपस्थित प्रोफेसर तकाषी, तोषियो तनाका, अकिरा ताकाहासि तथा तोमियो मिजोकामी जैसे जापानी विद्वानों का जुड़ाव जैसे प्रसंगों में जापान में हिन्दी भाषा का प्रभाव और प्रसार दिखाई देता है।

(आ) 6

(1) अहिंसा का अर्थ है—किसी अन्याय के विरुद्ध आत्मिक प्रतिरोध, अत: अहिंसा एक विज्ञान है। विज्ञान के अपने सिद्धान्त होते हैं, यह सिद्धान्त गणित की गणनाओं और क्रियाशील बलों की गणना पर आधारित होते हैं, इन सिद्धान्तों को हल कर के सिद्ध किया जा सकता है। पर अहिंसा एक मानव क्रिया है उसे विज्ञान की तरह हल नहीं किया जा सकता, पर अहिंसा के सिद्धान्तों की सफलता में संदेह नहीं किया जा सकता। अहिंसा के सिद्धान्तों की सफलता व्यक्ति की निष्ठा पर निर्भर करती है।

(2) मदर टेरेसा मानवता की सच्ची सेविका थीं। उन्होंने कोलकाता में 'मिशनरी ऑफ चैरिटी' संस्था की स्थापना की। दीन-दुखियों के प्रति उनके हृदय में अपार संवेदना थी। उन्होंने अपना सारा जीवन असहायों, मरीजों तथा बेघर बार लोगों की सेवा में समर्पित कर दिया। सारी दुनिया में उनके सेवा कार्यों की सराहना हुई।

मदर टेरेसा को नोबल पुरस्कार, नेहरू पुरस्कार, भारत रत्न पुरस्कार तथा बाल्जान पुरस्कार से सम्मानित और अलंकृत किया गया। पुरस्कारों में मिली धनराशि भी उन्होंने रोगियों की सेवा में लगा दी। सचमुच मदर टेरेसा दुनिया भर की मदर थीं क्योंकि उनका हृदय मानवता का मन्दिर था।

(3) एक बार एक सज्जन ने डाकघर में लेखक का फाउंटेन पेन लिया था। उसके बाद वे लेखक को कभी नहीं मिले, लेखक को उस फाउण्टेन पेन के लिए दु:ख अवश्य हुआ, पर उन्हें उससे कहीं अधिक दु:ख फाउंटेन पेन के कारण मित्र खो जाने से हुआ। लेखक कहते हैं कि उन्हें वह फाउंटेन पेन मिल भी जाए, तो भी उतना आनन्द नहीं होगा। जितना किसी खोई हुई पेंसिल के मिल जाने पर होगा, लेखक ने इसका कारण बताते हुए कहा कि फाउंटेन पेन की आशा तो उन्होंने डाकघर से बाहर निकलते ही छोड़ दी थी, पर खोई हुई पेंसिल मिलने की आशा हमेशा बनी रहती है।

(4) सरोवर में हंस और हंसिनी मन्त्री की समस्या के बारे में ही बातें कर रहे थे, हंसिनी ने हंस से मन्त्री की उदासी का कारण पूछा। हंस ने उसे बताया कि राजा के मर जाने से मन्त्री जी उसके उत्तराधिकारी के बारे में चिंतित हैं। राजा की अपनी कोई सन्तान न होने से मन्त्री जी के लिए यह समस्या थी कि वे सिंहासन पर किसे बैठाएँ ? हंसिनी ने हंस से कहा कि इसमें चिंता करने की क्या बात है ?

आखिर देश का असली मालिक तो प्रजा ही है। हंस ने कहा प्रजा में तो लाखों लोग हैं। राज-काज सम्भालने के लिए तो कुछ लोग ही चाहिए। तब हंसिनी ने कहा कि प्रजा में से कुछ होशियार व्यक्ति चुने जाएँ। वे ही प्रजा की ओर से राजकाज सम्भालें। चिंता से छुटकारा पाने के लिए मन्त्री जी को यही तरीका अपनाना चाहिए।

अथवा

निम्नलिखित में से किसी एक पाठ का सारांश लगभग 120 शब्दों में लिखिए—

(आ) (1) **महान विभूतियाँ** : 'महान विभूतियाँ' नामक पाठ में अपने-अपने क्षेत्र में शीर्ष स्थान पर पहुँची चार महान विभूतियों का परिचय दिया गया है। ये महान विभूतियाँ हैं—हॉकी के जादूगर ध्यानचन्द, प्रसिद्ध सितार वादक रविशंकर, गरीबों, मरीजों तथा असहायों की सच्ची सेविका मदर टेरेसा तथा कम्प्यूटर के क्षेत्र में तहलका मचा देने वाले बिल गेट्स।

ध्यानचन्द ने अपनी विलक्षण प्रतिभा के बल पर हॉकी के क्षेत्र में भारत का नाम पूरी दुनिया में मशहूर कर दिया। उन्होंने एम्स्टर्डम ओलम्पिक (1928), लॉस एंजेल्स (1932) तथा बर्लिन ओलम्पिक (1936) में भारत को लगातार तीन स्वर्ण पदक दिलाए। उन्होंने ओलम्पिक में 400 तथा अन्तर्राष्ट्रीय मैचों में 300 गोल का रिकॉर्ड स्थापित किया; वे **'हॉकी के जादूगर** के नाम से प्रसिद्ध हुए।

रविशंकर प्रसिद्ध सितार वादक तथा शास्त्रीय संगीतज्ञ थे। इन्होंने संगीत के क्षेत्र में भारत का नाम सारी दुनिया में विख्यात कर दिया। 1960 के दशक में उन्होंने बीटल्स के साथ काम करके विदेशों में शास्त्रीय संगीत की धूम मचा दी। उन्होंने अनेक रागों की स्थापना की। रविशंकर पूर्व तथा पश्चिमी संगीत के मध्य एक सेतु थे। उन्हें भारत रत्न, पद्म विभूषण, ग्रेमी, मैग्सेसे तथा क्रिस्टल व फूकूओका आदि अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

मानवता की सच्ची सेविका मदर टेरेसा ने कोलकाता में **'मिशनरी ऑफ चैरिटी'** की स्थापना की। उन्होंने मरीजों, असहायों, गरीबों तथा बेघर बार लोगों की विभिन्न प्रकार से सेवा की। उनके सेवाकार्य की सराहना पूरी दुनिया में हुई। उनकी संस्था ने भारत में ही नहीं एशिया, अफ्रीका, पोलैण्ड तथा आस्ट्रेलिया आदि देशों में भी कार्य किया। उन्हें भारत रत्न, नोबेल पीस प्राइज, नेहरू पुरस्कार तथा बाल्जान पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

बिल गेट्स को बचपन से ही कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग का शौक रहा। अपनी विलक्षणता प्रतिभा के बल पर उन्होंने विश्व की सबसे बड़ी कम्पनी तैयार की है। वे विश्व के सबसे धनी व्यक्ति माने जाते हैं, आज वैश्विक कम्प्यूटर उद्योग पर उनका स्वामित्व है। उन्होंने 'कारबिस कॉरपोरेशन' नामक कला फोटोग्राफी के डिजिटल अभिलेखागार की स्थापना की तथा **'द रोड अहेड'** और **'द बिजनेस एट द स्पीड ऑफ थॉट'** नामक दो पुस्तकें भी लिखी हैं।

(2) भीमराव अम्बेडकर मुम्बई के एल्फिन्स्टन कॉलेज से बी. ए. करने के बाद ज्ञान-साधना के लिए विदेश जाना चाहते थे, पर परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण यह सम्भव नहीं था। उनकी यह इच्छा पूरी हुई बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ द्वारा उनके लिए तीन वर्ष के लिए मंजूर की गई शिष्यवृत्ति से। उन्होंने कोलम्बिया यूनिवर्सिटी में एम. ए. में दाखिला लिया, अर्थशास्त्र मुख्य विषय रहा। भीमराव लाइब्रेरी जाते, पुरानी पुस्तकें खरीदकर सोलह से अठारह घण्टे तक अध्ययन करते। सन् 1915 में उन्हें एम. ए. की उपाधि मिली तथा 1916 में उन्होंने 'भारत में जातिवाद' नामक शोध-प्रबन्ध विद्यार्थी संघ के समक्ष पढ़कर सुनाया, लेकिन पैसों की तंगी के कारण उसे प्रकाशित नहीं करा सके। सन् 1924 में उन्हें शोध प्रबन्ध 'दि इवोल्यूशन ऑफ प्राविंशियल फाइनेंस इन इण्डिया' पर कोलम्बिया यूनिवर्सिटी से उन्हें बकायदा पीएच. डी. मिली। सन् 1916 में उन्होंने अर्थशास्त्र के उच्च अध्ययन के लिए 'लन्दन स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स एण्ड पॉलिटिकल साइंस' में अपना नाम दाखिल करवाया और 'ग्रेज इन' में कानून की उपाधि के लिए दाखिला लिया, किन्तु शिष्यवृत्ति की अवधि पूरी हो जाने के कारण उनकी तपस्या पूरी नहीं हुई। सन् 1920 में वे फिर लन्दन गए। सन् 1921 में उनके शोध प्रबन्ध पर उन्हें एम. एससी. की उपाधि दी गई फिर वे डी. एससी. के लिए काम करने में जुट गए। सन् 1921 में उन्होंने 'रुपये की समस्या' पर लन्दन यूनिवर्सिटी में अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया। वे 'बार-एट-लॉ' की परीक्षा देकर बैरिस्टर बन गए।

तत्पश्चात् वे लन्दन से जर्मनी चले गए। बॉन विश्वविद्यालय से डॉक्टर की उपाधि लेना चाहते थे, परन्तु इंग्लैण्ड के प्रोफेसर कैनन ने उन्हें वापस बुला लिया, वहाँ उन्होंने अपने शोध प्रबन्ध में परीक्षकों के बीच जो मतभेद थे, उन्हें दूर किया। बाद में इस पर लन्दन यूनिवर्सिटी ने उन्हें डी. एससी. की उपाधि दी।

6. (अ) 2

(1) संयुक्त वाक्य।
(2) साधारण (सरल) वाक्य।
(3) मिश्र वाक्य।

(आ) 2

(1) शनि सूर्य का चक्कर लगा रहा है।
(2) अपने पड़ोसी से मुझे एक हिरन मिला था।
(3) आश्रम के अधिकांश लोग जाएँगे।

(इ) (i) (अ) सच्चाई 1
(ब) व्याकुलता
(ii) (अ) पौराणिक 1
(ब) संयमी/संयमित

(ई) (1) डींग हाँकना।
अर्थ : बढ़ा-चढ़ाकर बातें करना।
वाक्य : कुछ लोगों को बिना वजह ही **डींग हाकने** की बुरी आदत होती है।

(2) पैरों पर लोटना।
अर्थ : प्रभावित होना।
वाक्य : जहाँ तक अध्यात्म का सवाल है, संसार भारत के **पैरों पर लौटता** है।

(3) हिदायत देना।

अर्थ : निर्देश देना।

वाक्य : पुलिस अधिकारी ने गाँव वालों को रात में स्वयं पहरा देने की हिदायत दी।

(4) दिमाग सातवें आसमान पर होना।

अर्थ : अत्यधिक अभिमान होना।

वाक्य : जबसे हमारे पड़ोसी का बेटा अधिकारी बना है, तब से उनका दिमाग सातवें आसमान पर रहता है।

(उ) (1) मीथेन पानी की भूमिका अदा करती है।

(2) जीवन जोखिम से भरा है।

(3) नर्स कहीं चली गई थी।

7. (1) **कंप्यूटर एक वरदान :**

प्रस्तावना—विगत कई वर्षों से देश में कम्प्यूटरों की चर्चा जोर-शोर से हो रही है। देश को कम्प्यूटरीकृत करने के प्रयास किए जा रहे हैं। कई उद्योग-धन्धों और संस्थानों में कम्प्यूटर के प्रयोग होने लगे हैं। कम्प्यूटरों के उन्मुक्त आयात के लिए देश के द्वार खोल दिए गए हैं। हमारे अधिकारी और मन्त्री सुपर कम्प्यूटर के लिए अमेरिका से जापान तक की दौड़ लगा रहे हैं। सरकारी प्रतिष्ठानों में कम्प्यूटर लगाने की भारी होड़ लगी है।

भूमिका—मानव सदैव से अपनी गणितीय गणनाओं के लिए गणना-यन्त्रों का प्रयोग करता रहा है। इस कार्य के लिए प्रयोग की जाने वाली प्राचीन मशीनों में **अबेकस** पहला साधन था। आज तो अनेक प्रकार के जटिल गणना-यन्त्र बना लिए गए हैं, जो बहुत जटिल गणनाओं का **परिकलन** अपने आप कर लेते हैं। इन सबमें सर्वाधिक तीव्र, शुद्ध एवं सबसे उपयोगी गणना करने वाला यन्त्र कम्प्यूटर है।

चार्ल्स बेबेज पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने 19वीं शताब्दी के आरम्भ में पहला कम्प्यूटर बनाया था। यह कम्प्यूटर लम्बी गणनाएँ कर उनके परिणामों को मुद्रित कर देता था।

कम्प्यूटर स्वयं ही गणना करके जिन जटिल-से-जटिल समस्याओं के हल मिनटों और सेकण्डों में निकाल सकता है, उन्हीं समस्याओं को हल करने के लिए मनुष्य को कई दिन, यहाँ तक कि महीनों लग सकते हैं। कम्प्यूटर से की जाने वाली गणनाओं के लिए एक विशेष भाषा में निर्देश तैयार किए जाते हैं। इन निर्देशों और सूचनाओं को कम्प्यूटर का 'प्रोग्राम' कहा जाता है। यदि कम्प्यूटर से प्राप्त होने वाला परिणाम अशुद्ध है तो इसका तात्पर्य यह है कि उसके 'प्रोग्राम' में कहीं-न-कहीं त्रुटि रह गई है। इसमें यन्त्र का कोई दोष नहीं है।

कम्प्यूटर का केन्द्रीय मस्तिष्क अपने सारे काम दो अंगों या संकेतों की गणितीय भाषा में ही करता है। अक्षरों या शब्दों को भी संकेतों की इस मशीनी भाषा में बदला जा सकता है। इस तरह अब शब्दों या पाठों को, यहाँ तक कि पूरी पुस्तकों और फाइलों को भी कम्प्यूटर के स्मृति-भण्डार में सुरक्षित रखा जा सकता है।

कम्प्यूटर और उसके उपयोग—कम्प्यूटर का व्यापक प्रयोग जिन क्षेत्रों में हो रहा है, उनका विवरण इस प्रकार है—

(i) बैंकिंग के क्षेत्र में—भारतीय बैंकों में खातों के संचालन और हिसाब-किताब रखने के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग आरम्भ किया गया है। कई राष्ट्रीयकृत बैंकों ने चुम्बकीय संख्याओं वाली चैक-बुक भी जारी की है। यूरोप के कई देशों में तो इस प्रकार की व्यवस्थाएँ की गई हैं कि घर के निजी कम्प्यूटर को बैंकों के कम्प्यूटरों के साथ जोड़कर लेन-देन का व्यवहार किया जा सकता है।

(ii) सूचना और समाचार-प्रेषण के क्षेत्र में—आज दूरसंचार की दृष्टि से कम्प्यूटर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अब 'कम्प्यूटर नेटवर्क' के माध्यम से देश के ही नहीं, विश्व के भी लगभग सभी मुख्य नगर एक-दूसरे से जुड़ गए हैं।

(iii) कला के क्षेत्र में—कम्प्यूटर अब कलाकार अथवा चित्रकार की भूमिका भी निभा रहे हैं। अब कलाकार को न तो कैनवास की आवश्यकता है, न रंग की और न ब्रशों की। कम्प्यूटर के सामने बैठा कलाकार अपने 'नियोजित प्रोग्राम' के अनुसार स्क्रीन पर चित्र बनाता है और यह चित्र प्रिण्ट की 'कुंजी' दबाते ही प्रिण्टर द्वारा कागज पर अपने उन्हीं वास्तविक रंगों के साथ प्रिण्ट हो जाता है।

(iv) वैज्ञानिक अनुसन्धान के क्षेत्र में—कम्प्यूटरों के माध्यम से वैज्ञानिक अनुसन्धान का स्वरूप ही बदलता जा रहा है। अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में कम्प्यूटर ने क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। इनके माध्यम से अन्तरिक्ष के व्यापक चित्र उतारे जा रहे हैं और इन चित्रों के विश्लेषण कम्प्यूटरों के माध्यम से हो रहे हैं। आधुनिक वेधशालाओं के लिए तो कम्प्यूटर सर्वाधिक आवश्यक हो गए हैं।

(v) औद्योगिक क्षेत्र में—बड़े-बड़े कारखानों में मशीनों के संचालन का कार्य अब कम्प्यूटर सँभाल रहे हैं। कम्प्यूटरों से जुड़कर रोबोट ऐसी मशीनों का नियन्त्रण कर रहे हैं, जिनका संचालन मानव के लिए अत्यधिक कठिन था। भयंकर शीत और गर्मी का भी उन पर कोई प्रभाव नहीं होता।

(vii) युद्ध के क्षेत्र में—वस्तुत: कम्प्यूटर का आविष्कार युद्ध के एक साधन के रूप में ही हुआ था। अमेरिका में जो पहला इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर बना था, उसका उपयोग एटम-बम से सम्बन्धित गणनाओं के लिए ही हुआ था। जर्मन सेना के गुप्त सन्देशों को जानने के लिए अंग्रेजों ने '**कोलोसस**' नामक कम्प्यूटर का प्रयोग किया था। अमेरिका की '**स्टार-वार्स**' योजना कम्प्यूटरों के नियन्त्रण पर ही आधारित है। सोवियत संघ के विश्व मानचित्र से विलोपित हो जाने के बाद स्टार-वार्स अर्थात् एस.डी.आई. (स्त्रातिजक डिफेन्स इनिशिएटिव) के प्रोग्राम्स को भी समाप्त कर दिया गया है। वास्तव में यह संचार माध्यम का ही युद्ध था।

इस प्रकार जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जिसमें कम्प्यूटर का प्रयोग न हो रहा हो, अथवा न हो सकता हो। कम्प्यूटरों के माध्यम से संगीत का स्वरांकन किया जा रहा है तथा वायुयान अथवा रेल-यात्रा के आरक्षण की व्यवस्था की जा सकती है। कम्प्यूटर में संचित विवरण के आधार पर 'कम्प्यूटर-ज्योतिष' का कार्य भी आरम्भ हो गया है।

उपसंहार—भारत जिस गति से कम्प्यूटर युग की ओर बढ़ रहा है, उसे देखकर ऐसा लगता है कि हम अपने आपको सम्पूर्ण रूप से कम्प्यूटर के हवाले करने के लिए विवश किए जा रहे हैं। कम्प्यूटर हमें बोलना, व्यवहार करना, अपने जीवन को जीना, मित्रों से मिलना और उनके विषय में ज्ञान प्राप्त करना आदि सब कुछ सिखाएगा। इसका अभिप्राय यह हुआ कि हम अपने प्रत्येक निर्णय को कम्प्यूटर से पूछने के लिए विवश हो जाएँगे। यह सही है कि कम्प्यूटर में जो विवश है कि जो बुद्धि या जो स्मरण-शक्ति कम्प्यूटरों को दी गई है उससे बाहर क्या हमारा कोई अस्तित्व नहीं ? हो भी तो क्या यह बात अपने आप में कुछ कम दु:खदायक नहीं है कि हम अपने प्रत्येक भावी कदम को कम्प्यूटर के माध्यम से प्रमाणित करना चाहें और परिणामस्वरूप अपने अस्तित्व को निरन्तर खोते रहें।

(2) एक घायल सैनिक की आत्मकथा :

पुणे के अश्विनी अस्पताल में लोग कारगिल युद्ध में घायल सैनिकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने आते थे। घायल सैनिकों में मैं भी था। लोगों के नेत्रों से छलकती सहानुभूति देखकर मेरा मन करता कि मैं खड़ा होकर उनका स्वागत करूँ, किन्तु मैं विवश था क्योंकि मोर्चे पर गोली लग जाने से मैं अपनी एक टाँग गँवा बैठा था। फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी थी।

मेरा जन्म उत्तराखण्ड के गढ़वाल जिले के एक गाँव में हुआ था। मेरे पिताजी ने मेरा नाम शमशेर बहादुर रखा। मेरे पिता जी कुमाऊँ रेजीमेन्ट में सूबेदार के पद से सेवानिवृत्त हुए थे इसलिए मेरे मन में सेना में भर्ती होने की चाह थी।

बचपन से ही मैं खेलकूद में विशेष रुचि रखता था। गढ़वाल की स्वास्थ्यप्रद जलवायु तथा नियमित व्यायाम करने के कारण मेरा शरीर हृष्ट-पुष्ट और फुर्तीला बन गया था। पढ़ाई के दौरान ही मैंने एन.सी.सी. का बी प्रमाण पत्र प्राप्त कर लिया था।

वास्तव में सैनिक बनने की प्रेरणा मुझे भारतीय सेना के गौरवमय इतिहास से मिली थी। मेरी इच्छा जानकर मेरे गुरुजनों को प्रसन्नता हुई थी और उन सभी ने मुझे प्रेरित भी किया था। अत: कॉलेज की शिक्षा पूरी कर मैं सेना में भर्ती हो गया।

मैंने कई सैनिक प्रशिक्षण केन्द्रों में मशीनगन, राइफल, तोप तथा आधुनिक शस्त्रास्त्र चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया था, मोटर ड्राइविंग का भी मुझे बहुत शौक था। सैनिक प्रशिक्षण लेते समय भी वह शौक पूरा हो गया। प्रशिक्षण के दौरान सैनिकों को शत्रु-क्षेत्र में घुसने और वहाँ के खतरों का सामना करने का प्रशिक्षण बहुत ही रोमांचकारी होता है।

प्रशिक्षण पूरा करने के बाद सीमा सुरक्षा बल में मेरी नियुक्ति हुई थी, पाकिस्तान से लगी हुई कारगिल क्षेत्र की एक चौकी की रक्षा का कार्य भार मुझे सौंपा गया था। मैंने पाकिस्तान के बहुत से सैनिकों को हमेशा के लिए सुला दिया था।

एक रात घुसपैठियों ने बड़ी संख्या में हमारी सीमा में घुसने का दुस्साहस किया था। मैंने और मेरे साथियों ने उन्हें पीछे खदेड़ दिया था, किन्तु शत्रु पक्ष के किसी सैनिक की बंदूक की गोली मेरी एक टाँग में लगी और मैं बेहोश होकर गिर पड़ा और जब मुझे होश आया तो, मैंने अपने आपको इस अस्पताल में पाया।

यहाँ मेरी जख्मी टाँग काट दी गई है और मुझे बैसाखी के सहारे चलना पड़ रहा है फिर भी मुझे गर्व है, अपने देश के लिए इस त्याग को मैं बहुत मामूली समझता हूँ। किसी भी सैनिक के लिए अपनी जान देकर देश की रक्षा करना फक्र की बात है और मेरी भी दिली इच्छा यही है कि मैं अपने देश पर कुर्बान हो जाऊँ।

(3) भ्रष्टाचार के बढ़ते कदम :

भूमिका—भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है भ्रष्ट-आचरण, किन्तु आज यह शब्द 'रिश्वतखोरी' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। भ्रष्टाचार की यह समस्या इतनी व्यापक हो गई है कि हम यहाँ तक कहने लगे हैं कि आज के युग में 'भ्रष्टाचार' से वही बच पाता है जिसे भ्रष्ट होने का अवसर नहीं मिल पाता।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के अवसर पर देश की जनता ने यह परिकल्पना की थी कि अब हमारी अपनी सरकार होगी और हमें भ्रष्टाचार से मुक्ति मिलेगी, किन्तु यह परिकल्पना सच नहीं हुई और अब तो हालात इतने बदतर हो गए हैं कि इस भ्रष्टाचार रूपी दानव ने समाज को पूरी तरह अपने मजबूत जबड़ों में फँसा लिया है। आज भ्रष्टाचार

का जो स्वरूप हमारे देश में विद्यमान है—उससे सभी परिचित हैं। सरकारी कार्यालयों में बिना भेंट-पूजा दिए हुए कोई काम करवा लेना असम्भव है। क्लर्क के रूप में जो व्यक्ति सीट पर बैठा हुआ है वही आपका असली भाग्य विधाता है। अफसर को यह ऐसे-ऐसे चरके देता है कि बेचारे को नानी याद आ जाती है। यदि क्लर्क न चाहे, तो आप एड़ियाँ रगड़ते रहिए, आपकी फाइल पर 'फारवर्डिंग' नोट नहीं लगेगा और भला किस अफसर की मजाल है जो क्लर्क की टिप्पणी के बगैर अपना निर्णय लिख दे। कहावत है कि प्रान्त में बस दो ही शक्तिशाली व्यक्ति हैं—लेखपाल या राज्यपाल। लेखपाल ने जो लिख दिया, उसे काटने वाला तो जिलाधीश भी नहीं।

शिक्षक कॉलेजों में पढ़ाने में उतनी रुचि नहीं लेते जितनी ट्यूशन की दुकानों को चलाने में लेते हैं। विद्यार्थियों को ट्यूशन पढ़ने के लिए बाध्य करने हेतु तरह-तरह के हथकण्डे अपनाए जाते हैं। स्कूल-कॉलेज में कक्षाएँ नहीं लगतीं, किन्तु कोचिंग स्कूलों में सदैव भीड़ रहती है। ट्यूशन की मोटी कमाई पर वे कोई आयकर नहीं देते।

राजनीति में भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर है। नेताजी चुनाव जीतने के लिए सभी मर्यादाओं को ताक पर रख देते हैं और जब 'भ्रष्टाचार' प्रलोभन आदि से चुनाव जीतते हैं तो बाद में भ्रष्टाचार से कमाई करते हैं। राजनीतिक पार्टियाँ चुनावी खर्च के लिए उद्योगपतियों से भारी रकम चंदे के नाम पर लेती हैं और फिर बाद में अपने नीतिगत निर्णयों से इन बड़े उद्योगपतियों को लाभ पहुँचाती हैं। रक्षा सौदों में कमीशन, दलाली आम बात हो गई है। 'तहलका' के रिपोर्टरों ने स्टिंग ऑपरेशन के जरिए जो खुलासे किए वे जनता की आँख खोलने वाले हैं। भ्रष्टाचार ने ही राजनीति का अपराधीकरण कर दिया है।

भ्रष्टाचार के कारण—भ्रष्टाचार का मूल कारण है अधिक-से-अधिक धन कमाने की प्रवृत्ति। आज हमारी दृष्टि बदल गई है। हम भौतिकवादी हो गए हैं और वस्तुओं के प्रति गहरा मोह जड़ गया है। सुविधाभोगी जीवन-पद्धति के हम आदी बन गए हैं। जैसे भी सम्भव हो भोग-विलास के उपकरण एकत्र किए जाएँ। पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा ने भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया है। अब यदि पड़ोसी के घर में महँगे उपकरण हैं तो भला मेरे यहाँ क्यों न हों? बस एक अन्धी दौड़ प्रारम्भ हो जाती है जिसका समापन भ्रष्टाचार के कुएँ में होता है।

भ्रष्टाचार को समाप्त करने के उपाय—भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए सरकार ने कानून बनाए हैं, किन्तु वे अधिक प्रभावी नहीं हैं। कहा जाता है कि भ्रष्टाचार की जड़ें ऊपर होती हैं। यदि किसी विभाग का मन्त्री या सचिव रिश्वत लेता है तो उसका चपरासी भी भ्रष्ट होगा। अतः भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए ऊपर के पदों पर योग्य एवं ईमानदार लोगों को आसीन किया जाए। कर्तव्यनिष्ठ एवं ईमानदार लोगों को सरकार एवं समाज की ओर से सम्मानित किया जाए तथा नैतिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया जाए। शिक्षकों एवं समाज के अन्य जिम्मेदार नागरिकों को विद्यार्थियों के समक्ष आदर्श उपस्थित करना चाहिए। भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों का तिरस्कार एवं बहिष्कार समाज करे और मीडिया ऐसे लोगों को महिमामण्डित न करे जो भ्रष्टाचार से धन अर्जित करते हैं। राजनीति में साफ-सुथरे लोगों के आने पर ही राजनीतिक भ्रष्टाचार से मुक्ति मिल सकेगी।?

यदि इन उपायों को ईमानदारी से लागू कर दिया जाए तो कोई कारण नहीं कि हम भ्रष्टाचार की इस बीमारी से छुटकारा न पा सकें। जिन राज्यों में लोकायुक्त नियुक्त हैं और जहाँ उन्हें कार्य करने की पूरी स्वतंत्रता मिली हुई है वहाँ तमाम भ्रष्ट लोगों के नकाब उतरे हैं। यह पढ़कर आश्चर्य होता है कि एक मामूली क्लर्क के यहाँ छापे में करोड़ों की सम्पत्ति प्राप्त हुई। भ्रष्टाचार काले धन को बढ़ावा देता है, नैतिक मूल्यों का क्षरण करता है, और इंसानियत को नेस्तनाबूद करता है अतः उस पर प्रभावी अंकुश लगाया जाना अत्यंत आवश्यक है।

(4) यदि समाचार पत्र न होते :

भूमिका—नगरों में बिस्तर छोड़ते ही पता नहीं भगवान की याद आती है कि नहीं, समाचारपत्र यानी अखबार की याद अवश्य हो आती है। हम तब तक उन्मन बने रहते हैं, जब तक सुबह-सुबह अखबार न आ जाए। प्रातःकालीन समीर की भाँति उसके आते ही हमारे मन-प्राण प्रसन्न-प्रफुल्ल हो उठते हैं। यह बात दूसरी है कि आज का अखबार कल भले ही बासी हो जाए।

समाचारपत्र मुख्य रूप में मुख्य घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करते हैं। देश-विदेश में जिस क्षण भी राजनीतिक भूकम्प आया, समाचारपत्र में शीघ्र ही उसके कंपन्न का अंकन हो गया। अतः, समाचारपत्र युग के गतिमापक यंत्र हैं। यह ऐसा दर्पण है, जिसमें हम जनजीवन का प्रतिबिंब देखते हैं, यह ऐसा शीशा है, जिसके आर-पार हम देख सकते हैं। समाचारपत्र समाज का थर्मामीटर है, जिसमें सामाजिक वातावरण के तापमान का भान होता है।

समाचारपत्रों की जन्मभूमि यूरोप है। सबसे पहले समाचारपत्र हॉलैंड से 1526 ई. में प्रकाशित हुआ। इसके बाद जर्मनी से 1610 ई., इंग्लैण्ड से 1622 ई., अमेरिका से 1690 ई., रूस से 1703 ई. तथा फ्रांस से 1736 ई. में समाचारपत्र प्रकाशित हुए। लंदन से 'डेली करेंट' नामक दैनिक समाचारपत्र 11 मार्च 1702 में प्रकाशित हुआ। हिन्दी का सबसे पहला पत्र

'उदंत-मार्तंड' 1826 ई. में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। इन दिनों दुनिया में लाखों समाचारपत्र छपते हैं। केवल भारतवर्ष में 2400 के लगभग दैनिक तथा 400 के लगभग साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होते हैं। प्रमुख भारतीय दैनिक समाचारपत्रों में 'टाइम्स ऑफ इंडिया', 'स्टेट्समैन', 'अमृतबाजार पत्रिका', 'नवभारत टाइम्स', 'इंडियन एक्सप्रेस', 'आज', 'जनसत्ता', 'टेलीग्राफ', 'हिन्दुस्तान', 'आनंदबाजार पत्रिका', 'हिन्दू', 'मलयालम मनोरमा', 'जनशक्ति' आदि उल्लेखनीय हैं।

समाचारपत्र चाहे दैनिक हो या साप्ताहिक, पाक्षिक हो या मासिक—इसके लिए बहुत बड़े संगठन की आवश्यकता होती है। पत्रसंचालक, मुद्रक, प्रकाशक, संवाददाता तथा संपादक बड़े महत्वपूर्ण होते हैं। संवाददाता तो आधुनिक युग के नारद हैं। उनके लिए न कोई फल वर्जित है, न कोई स्थान। यदि वे हंस की तरह विवेकी हैं, तो गलत-सही समाचारों को परखकर पत्रों में स्थान देंगे, यदि नहीं तो बिल्कुल घटिया सम्वाचार। संपादक का कार्य तो और भी उत्तरदायित्वपूर्ण है। उसकी थोड़ी असावधानी से बड़ा अनर्थ हो सकता है।

अत: समाचारपत्र आधुनिक युग के अनिवार्य अंग बन चुके हैं। इसीलिए, नेपोलियन ने कभी कहा था कि मैं लाखों संगीनों की अपेक्षा तीन विरोधी समाचारपत्रों से अधिक डरता हूँ। अनेक विदेशी विचारकों ने समाचारपत्र के बारे में अपने विचार प्रकट किए हैं। हेन ने कहा है कि आजकल हम विचारों के लिए संघर्ष करते हैं और समाचारपत्र हमारी किलेबंदियाँ हैं। समाचारपत्र को जनता का अध्यापक बताया है, तो किसी ने उसे जनता का विश्वविद्यालय घोषित किया है।

आधुनिक युग में समाचारपत्रों की शक्ति अपरिसीम हो गई है। समाचारपत्र आज बड़े-बड़े धनपतियों एवं शस्त्रपतियों को भी अपने संकेत पर नचा रहे हैं। जो निर्बल हैं, उपेक्षित और प्रताड़ित हैं, उनके लिए समाचारपत्र सशक्त ढाल भी बन जाते हैं। इसलिए, एक कवि ने इनका गुणगान करते हुए कहा है—

झुक जाती है तलवार भी अखबार के आगे,
झुक जाती है सरकार भी अखबार के आगे।
अँगुली पै नचाती है यह सरमायादार को,
सड़कों पै नचाती है यह लीडर की कार को।
मुर्दे को होश देती है अखबारनवीसी।
जिंदे को जोश देती है अखबारनवीसी।

समाचारपत्र अपने देश की जनता के विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जनजीवन की गतिविधियों को जन-जन तक पहुँचाते हैं, जनता में साहस भरते हैं। यदि समाचार पत्र न होते तो ऐसी परिस्थिति न होती।

(5) **कल करे सो आज कर..... :**

प्रस्तावना—समय तेजी से भागते हुए ऐसे व्यक्ति के समान है जिसके सिर पर केवल सामने कुछ बाल हैं पीछे का भाग गंजा और चिकना है। यदि आगे से ही उसे पकड़ लो तब ठीक है, बाद में फिर वह हाथ नहीं आता तुरन्त सरक जाता है। जो पल बीत गया, बीत गया। कहा भी है—"गया वक्त फिर हाथ नहीं आता।"

समय की महत्ता—हमें जीवन मिला है अर्थात् जीवन को उपयोगी बनाने के लिए थोड़ा-सा समय मिला है। अत: जीवन का जो महत्व है वही समय का भी महत्व है। समय खोने का अर्थ है, जीवन खोना।

इसीलिए महापुरुषों ने समय पर ही कुछ कर लेने के उपदेश समय-समय पर दिए हैं। कबीर हमें सावधान करते हुए कहते हैं—

"काल्ह करै सो आज करि, आज करै सो अब।
पल में परलै होइगी, बहुरि करैगो कब।।"

समय को सही ढंग से पहचानने वाले और उसका सदुपयोग करने वाले ही जीवन-संग्राम में सफल होते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने समय की महत्ता को सर्वोपरि मानते हुए कहा—"मेरे विचार में एक वस्तु का महत्व सबसे अधिक है—समय की परख। प्रत्येक कार्य को करने या न करने का समय होता है। यदि आपने समय को परखने की कला सीख ली है, तो पुन: आपको किसी प्रसन्नता या सफलता की खोज में मारे-मारे भटकने की आवश्यकता नहीं, यह स्वयं आकर आपका द्वार खटखटाएगी।" वास्तव में, समय का समुचित उपयोग ही जीवन में सफलता की कुंजी है। हर बीतता हुआ पल हमें जगा रहा है।

सच है, समय बीत गया और काम नहीं हुआ तो पछतावा ही हाथ रह जाता है। इसलिए समय की महत्ता का अनुभव करके सही समय पर ही सही काम करें तो सफलता मिलती ही है, वक्त निकल जाने का पश्चाताप भी नहीं रहता। समय की इसी उपयुक्तता को लक्ष्य करके गोस्वामी तुलसीदास ने कहा था—

"का बरषा जब कृषी सुखाने। समय चूकि पुनि का पछिताने।"

खेती सूख जाने के बाद वर्षा होने से क्या लाभ? जो समय चूक गया सो चूक गया। जिस समय का सदुपयोग कर लिया गया, वही अपना है।

सदुपयोग का अर्थ—समय के सदुपयोग से अभिप्राय है उचित समय पर अधिकाधिक अच्छा कार्य करके उसका भरपूर उपयोग कर लेना, एक पल भी बुरे काम में अथवा आलस्य में व्यर्थ न गँवाना। समय का सदुपयोग चरित्र के विकास में सहायक होता है।

समय के सदुपयोग के लाभ—यदि हम समय का सदुपयोग करना सीख लें, तो इससे लाभ ही लाभ हैं। व्यर्थ ही समय व्यतीत करके जो काम दिन-भर में कर पाते हैं, उसे कुछ ही घण्टों में कर सकते हैं। इस प्रकार पूरे जीवन में हम कई गुना कार्य करके अपना विकास और मानवता की सेवा कर सकते हैं। हमारे चरित्र में दृढ़ता आती है। जीवन के प्रति हमारी आस्था बढ़ती है और सच्चे अर्थों में हम मनुष्य बन जाते हैं।

संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, सभी ने समय के महत्त्व को समझा था और उसका पूर्ण उपयोग किया था। तभी तो वे जीवन में इतने कार्य कर गए, जो बहुत से लोग अनेक जीवन धारण करके भी नहीं कर पाते। शंकराचार्य ने सम्पूर्ण वेद-वेदान्त का अध्ययन किया। भारत के चार कोनों में चार पीठों की स्थापना की और केवल 32 वर्ष की आयु में ये सब कार्य करके संसार से विदा हो गये। यदि उन्होंने एक पल भी व्यर्थ गँवाया होता तो क्या वे इतनी कम आयु में ही यह सब कर पाते? गौतम बुद्ध के मन में इस बात की पीड़ा उठी कि संसार के प्राणी दु:खी हैं। समय को चूके नहीं। जिसने समय का महत्त्व समझ लिया उसने जीवन के सुख का रहस्य पा लिया। संसार उनके चरणों में झुक गया। महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू आदि सभी महापुरुष इसीलिए ऊँचे उठ सके क्योंकि उन्होंने समय को व्यर्थ में नहीं गँवाया। जो काम करो निश्चित समय में करो। जिन देशों के लोग समय का मूल्य जानते हैं, वे विकास के पथ पर आगे-आगे चल रहे हैं। यह दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश के कार्यालयों में समय से कार्य नहीं होता है। समय खोना हमारा राष्ट्रीय चरित्र बन गया है। इस दोष को दूर किये बिना राष्ट्र का कल्याण सम्भव नहीं है।

उपसंहार—व्यक्ति, राष्ट्र और विश्व की प्रगति के लिए हर पल एक नवीन आशावादी सन्देश लेकर आता है। जो उस पल को पकड़ लेते हैं, आगे बढ़ जाते हैं। जो चूक जाते हैं, पिछड़ जाते हैं। जीवन एक दौड़ है। एक क्षण भी पीछे रह जाने पर पराजय हो सकती है। 'समय चूकि पुनि का पछताने।' अच्छा हो, हम समय को पहचानें, उसका मूल्य समझें तथा उचित समय पर कार्य करके समय का सदुपयोग करें और अपने जीवन का वांछित लक्ष्य प्राप्त करें।

8. (अ) **तैयार किए हुए प्रश्न—** 5

(1) राजनीति किस सिद्धान्त पर चलती है?

(2) सच्चा सुधार किस धर्म में होता है?

(3) हमें श्रद्धापूर्वक किस धर्म का विकास करना चाहिए?

(4) प्रेम धर्म कैसा होता है?

(5) मित्र के निर्बल होने पर हम कैसे माने जाएँगे?

अथवा

सार : आजकल अनेक देशों की राजनीति स्वार्थ और अन्याय के सिद्धान्तों पर ही चलती है, परन्तु सच्चा सुधार तो प्रेम-धर्म और पड़ोसी-धर्म में ही है। हमें अपने अन्दर श्रद्धापूर्वक पड़ोसी धर्म का विकास कर सज्जन लोगों के साथ मैत्री पूर्ण तथा दुर्जन के साथ असहयोग करना चाहिए। प्रेम-धर्म का नियम यही है। प्रेम-धर्म दीन बने रहकर सहायता की अपेक्षा नहीं करता। प्रेम-धर्म निर्भय होता है। हम जिससे प्रेम करते हैं। यदि उसकी शक्ति बढ़ती है तो हम भयभीत नहीं होते तथा उसके निर्बल होने पर हम भी कमजोर माने जाएँगे।

शीर्षक—सच्चा सुधार

(ब) **पत्र :** 5

प्राजक्ता पाटील
105 स्वामी विवेकानन्द नगर
नागपुर।
दिनांक - 24.02.18
सेवा में,
प्राचार्य महोदय
कनिष्ठ महाविद्यालय
नागपुर।

विषय : पाँच दिनों की छुट्टी हेतु प्रार्थना-पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा हूँ। मेरी बहन की शादी कोलकाता में होना तय हुआ है। अत: इन दिनों में कोलकाता जाने के कारण विद्यालय आने में असमर्थ हूँ।

अत: आपसे निवेदन है कि मुझे 5 मार्च से लेकर 9 मार्च तक अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। आपकी अति कृपा होगी।
धन्यवाद !

आपकी शिष्या
प्राजक्ता पाटील
बी.ए. प्रथम वर्ष

अथवा

विज्ञापन

'नहाने का सौंदर्य साबुन'

पेश है हल्दी और चन्दन के गुणों से भरपूर शरीर को कान्तियुक्त एवं तरोताजा बनाए रखने के लिए ब्यूटी (Beauty) बाथ साबुन को आज ही आजमाइए, आज ही स्नान कीजिए–

खुशबू ऐसी जो छा जाए
मन को महका जाए
शरीर को स्वच्छ चमका जाए
बच्चे, बूढ़े सभी को भाए
'ब्यूटी बाथ सोप, ब्यूटी बाथ सोप'
लाइए! लाइए! ब्यूटी बाथ सोप
शरीर की दुर्गन्ध को दूर कर
सुगन्धियुक्त बनाए
आज का ब्यूटीबाथ सोप

पता– अ ब स दुकान
अ ब स नगर

(सिर्फ ₹ 10/- में)

■■